कबीर

बीजक

कबीर बीजक

(सम्पूर्ण कबीर वाणी)

(दोहे, शब्द, साखी, रमैनी, कहरा, पद)

डायमंड बुक्स

eISBN: 978-93-5261-116-4
© प्रकाशकाधीन
प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया,
फेस-II नई दिल्ली-110020
फोन 011-40712200
ईमेल : ebooks@dpb.in
वेबसाइड : www.diamondbook.in
संस्करण : 2014

Kabir-Bijak

Edited By : *Swami Anand Kulshresth*

जीवन परिचय

कबीर प्रेम का नाम है। कबीर दर्शन, एकता और सद्भाव का भी नाम है। कबीर का संगम प्रयाग के संगम से ज्यादा गहरा है। वहां कुरान और वेद ऐसे खो गए हैं कि कोई अंतर ही नहीं रह गया है। कबीर का मार्ग सीधा और साफ है। पंडित नहीं चल पाएगा इस मार्ग पर। निर्दोष और कोरा कागज जैसा मन ही चल पाएगा उस पर।

कबीर का जन्म कहां हुआ? उनके माता-पिता कौन थे? उनके गुरु का नाम क्या था? इस विषय में प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों में एकरूपता नहीं है। कबीर के संबंध में यह निश्चित नहीं कि वे हिन्दू थे या मुसलमान। हिन्दुओं का मानना है कि कबीर हिन्दू थे। मुसलमानों का कहना है कि वह मुसलमान थे।

कबीर के जन्म को लेकर कई तरह की कथाएं प्रसिद्ध हैं। लगभग छः सौ वर्ष पहले की बात है। काशी का जुलाहा नीरू अपनी पत्नी नीमा के साथ काशी की तरफ आ रहा था। उसी दिन उसका गौना हुआ था। रास्ते में तालाब पड़ता था। हाथ-पैर धोने के लिए वह तालाब के पास पहुंचा तो उसने किसी बालक के रोने की आवाज सुनी। नीरू को जिज्ञासा हुई। चारों तरफ देखा। आवाज एक झाड़ी की तरफ से आ रही थी। उसी ओर वह बढ़ गया। देखा, वहां एक नन्हा-सा बालक पड़ा है। इतना छोटा जैसे कुछ देर पहले ही पैदा हुआ हो। नीमा डरी कि कुछ झंझट होगा। लोग क्या सोचेंगे। अपवाद होगा। बदनामी होगी। लेकिन जब नीमा ने बच्चे को ध्यान से देखा तो उसका मन उस पर मोहित हो गया। फिर उन दोनों ने लोक-लाज की परवाह न की। वे बच्चे को अपने साथ ले आए। काशी में जो मुहल्ला कबीर चौरा के नाम से आज मशहूर है, वहीं पर नीरू का घर था।

वे बच्चे को लेकर घर आ गए। बच्चे का नामकरण करने के लिए उन्होंने काजी को बुलाया। काजी ने कुरान खोला। कहा जाता है कि उसमें हर जगह कबीर, कुब्रा, अकबर आदि शब्द मिले। अरबी में ये शब्द महान परमात्मा के लिए आते हैं। काजी अचंभित था। साधारण जुलाहे के बच्चे को कैसे इतना बड़ा नाम दिया जाए। काजी ने कई बार कुरान उलटा-पलटा, पर हर बार वही शब्द उसे नजर आए।

फिर क्या था, इस खबर को सुनकर कई काजी नीरू के घर आ गए और उन्होंने नीरू से कहा कि इस बच्चे का कत्ल कर दे, वर्ना इस बालक की वजह से कोई अनहोनी हो सकती है। नीरू-नीमा इतने बेरहम नहीं थे। उन्होंने काजियों की सलाह नहीं मानी और बालक का नाम कबीर रख दिया।

कबीर के जन्म को लेकर एक दूसरी लोक-कथा भी प्रचलित है–एक रोज एक ब्राह्मण अपनी विधवा बेटी के साथ स्वामी रामानंद के दर्शनों के लिए गया। पिता के साथ ही बेटी ने भी रामानंद के चरण स्पर्श किए। रामानंद ने ध्यान नहीं दिया और अचानक उनके मुंह से निकल गया कि पुत्रवती भव। स्वामी रामानंद का आशीर्वाद भला कैसे झूठा होता। कुछ महीनों के बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया। विधवा के लिए यह शुभ घटना नहीं थी। लोक-लाज के कारण उस ब्राह्मण कन्या ने बालक को लहरतारा तालाब के किनारे छोड़ दिया।

इसी बालक को नीरू और नीमा ने लहरतारा के किनारे से पाया था। इस तरह से कबीर हिन्दू परिवार में पैदा हुए और मुसलमान घर में पले।

एक तीसरी लोक-कथा भी कबीर के जन्म को लेकर है–शुकदेवजी ने कबीर के रूप में अवतार लिया था। पूर्व जन्म में उन्होंने बारह वर्ष तक गर्भावास का कष्ट भोगा था। इसलिए इस बार गर्भावास से बचने के लिए उन्होंने अपने-आपको एक सीपी में बंद कर लिया और उसे गंगा के किनारे छोड़ दिया। यही सीपी बहते-बहते लहरतारा तालाब में पहुंच गई और एक कमल के पत्ते पर खुल गई। इस सीपी से एक शिशु का जन्म हुआ। यही शिशु कबीर के नाम से मशहूर हुआ।

उपरोक्त सारी कथाओं से यही सिद्ध होता है कि कबीर का जन्म कैसे हुआ कुछ भी निश्चित रूप से कहना मुश्किल है।

कबीर किस तिथि, तारीख और सन् में पैदा हुए यह भी निश्चित करना कठिन ही है।

कबीर के जन्म के विषय में यह छंद मशहूर है–

चौदह सौ पचपन साल गए

चन्द्रवार इक ठाठ ठए।

जेठ सुदी बरसायत की

पूरनमासी प्रकट भए।

इस छन्द का अर्थ है–बिक्रम के 1455 साल बीतने पर सोमवार को जेठ की पूर्णमासी, वट सावित्री के पर्व पर कबीर पैदा हुए थे। वट सावित्री के शुभ अवसर पर आज भी कबीरपंथी महात्मा कबीर का जन्मोत्सव मनाते हैं। कुछ विद्वान कबीर का जन्म-काल 1456 मानते हैं और यह सही भी लगता है क्योंकि छन्द में भी है कि 1455 वां संवत बीत जाने पर यानी सं. 1456 में महात्मा कबीर का जन्म हुआ।

कबीर के जन्मस्थान के बारे में भी तीन मत हैं–

मगहर, काशी, आजमगढ़ में बेलहरा गांव। कबीर ने लिखा भी है–

'पहिले दरसन मगहर पायो पुनि कासी बसे आई।' अर्थात काशी में रहने से पहले कबीर ने मगहर देखा। मगहर में कबीर का मकबरा भी है।

कबीर का अधिकांश समय काशी में बीता। वे 'काशी के जुलाहे' के रूप में ही जाने जाते हैं। कबीरपंथी भी काशी को कबीर का जन्मस्थान मानते हैं।

कबीर मगहर, काशी, आजमगढ़ में से कहां पैदा हुए थे, इस संबंध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। किसी एक जगह पर मुहर लगाना मुश्किल है।

कबीर के माता-पिता निर्धन थे। कबीर के पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। कबीर किताबी विद्या प्राप्त न कर सके। उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार भी किया है–'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ।'

लेकिन किताबी विद्या ही सब कुछ नहीं होती। कबीर किताबी ज्ञान से भी ऊपर निकले। वह तो ज्ञान के भंडार थे। उनमें भावुकता, प्रतिभा कूट-कूटकर भरी थी।

वह बचपन में ही राम-भक्ति में डूब गए। जुलाहा परिवार में पलने-बढ़ने के बाद भी उन पर मुसलमानी रहन-सहन का प्रभाव नहीं पड़ा। वे हिन्दुओं की तरह कंठी-माला धारण करते, तिलक लगाते और राम-नाम का सुमिरन करते।

कबीर को एक सच्चे गुरु की तलाश थी। काशी में उन दिनों सबसे प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य स्वामी रामानंद थे। कबीर के मन में उन्हीं से दीक्षा लेने की इच्छा जागी। लेकिन वैष्णव आचार्य एक जुलाहे को कैसे दीक्षा दे सकता था। कबीर ने इस बाधा को दूर करने के लिए एक उपाय निकाला।

कबीर सुबह के चार बजे से पहले ही गंगा की सीढ़ियों पर जाकर लेट गए। स्वामी रामानंद गंगा में स्नान करके सीढ़ियां चढ़ रहे थे, तभी उनका पैर किसी से टकराया। 'राम-राम' कहकर स्वामी जी ने पैर हटा लिया। कबीर ने इसी 'राम राम' को गुरुमंत्र मान लिया। इस तरह से कबीर ने रामानंद को अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

कबीर के समय में भारत पर मुसलमानों का राज्य था। हिन्दुओं पर तरह-तरह के अत्याचार हुआ करते थे। ऐसे में दोनों जातियों में प्रेम के स्थान पर घृणा ही अधिक थी।

कबीर परम वैरागी थे। सांसारिक मोह-माया से उनका कोई सरोकार नहीं था। धन-दौलत उनके लिए व्यर्थ था, फिर भी वह गृहस्थ-संन्यासी के रूप में ही जीवन बिताते रहे। वे कपड़ा बुनकर उसे बाजार में बेचने जाते और उससे जो भी लाभ होता, उससे अपना और अपने परिवार का जीवन-निर्वाह किया करते थे।

कबीर एक सफल गृहस्थ, सफल इंसान और महान संत ही नहीं थे बल्कि एक समाज सुधारक भी थे। कबीर को जब लगने लगा कि उनका अवसान-काल समीप है, अब इस शरीर को त्यागना होगा तो उन्होंने काशी नगरी को छोड़ने का मन बनाया।

वह इस बात से सहमत नहीं थे कि काशी मोक्ष की नगरी है। कबीर ने घोषणा की–'वह अब मगहर में जाकर रहेंगे।'

मगहर के विषय में यह अंधविश्वास था कि वहां मरने पर मुक्ति नहीं मिलती। कबीर तो जीवन-भर अंधविश्वास के विरुद्ध लड़ते रहे थे। मगहर के माथे पर लगे इस कलंक को धोना जरूरी था। अंधविश्वास का विरोध आवश्यक था।

इस घोषणा से कबीर के शिष्यों को बड़ा कष्ट हुआ। कबीर ने उन्हें समझाया–'मोक्ष के लिए स्थान नहीं कर्म प्रधान होते हैं। 'भावभक्ति' के भरोसे वे मगहर में प्राण छोड़ने पर भी अपने राम में इस प्रकार घुल-मिल जाएंगे जैसे पानी में पानी मिल जाता है। जिसके हृदय में राम का वास है, उसके लिए काशी और मगहर में कोई भी तो अंतर नहीं। अगर काशी में मृत्यु होने पर ही मोक्ष मिलता है तो फिर राम की कौन-सी बड़ाई समझी जाए?'

अंततः कबीर मगहर पहुंच गए। वहां पहुंचने पर उनके भक्तों का मेला-सा लग गया।

हर कोई उनके दर्शन की साध लेकर आता था। अंतिम दिन उन्होंने सबको एकत्र किया। कबीर ने सबकी ओर देखा। तभी लोगों ने देखा कि एक ज्योति कबीर के शरीर से बाहर आई और आसमान की ओर चली गई। सबको ही विश्वास हो गया कि कबीर का महाप्रयाण हो गया।

उनके निधन का समाचार मिलते ही विवाद खड़ा हो गया। काशी नरेश वीरसिंह और उनके हिन्दू-भक्त चाहते थे कि कबीर का अंतिम संस्कार अग्नि में जलाकर हिन्दू-पद्धति से किया जाए। मुस्लिम समाज का कहना था कि उनका संस्कार मुस्लिम मजहब के अनुसार दफनाकर होना चाहिए।

बात इतनी बढ़ी कि दोनों ओर से तलवारें खिंच गईं। फिर लोगों ने जब कुटी का द्वार खोला तो वे सब दंग रह गए। वहां कबीर का शव नहीं था। उसके स्थान पर फूलों का एक छोटा-सा ढेर पड़ा था।

अब झगड़ा खत्म हो गया था। दोनों धर्मों के लोगों ने अपनी-अपनी आस्था के अनुसार कबीर का संस्कार किया।

कबीर की रचनाएं

दोहा–यह कविता की वह विधा है जिसमें दो पंक्तियों में 24 मात्रा का प्रयोग किया जाता है। अनेक हिन्दी कवियों ने दोहे की शक्ल में काव्य रचनाएं की हैं।

रमैनी–इसमें कुल मिलाकर चौरासी पद्य हैं और साथ ही छिहत्तर साखी भी हैं। रमैनी चौपाई और साखी दोहे में है। इस विशाल पुस्तक में चौरासी लाख योनियों की कल्पना की गई है।

शब्द–इसमें कुल मिलाकर एक सौ पन्द्रह पद्य हैं। कबीर का कहना था कि निर्णायक शब्दों के जरिए ही सारी भ्रांतियां समाप्त हो सकती हैं और जीव अनादिकाल से ही वाणी के शब्द जाल में उलझकर रह गया है। 'शब्द' की रचना कबीर ने इसी बंधन को सुलझाने के लिए की है।

साखी–इसमें कुल तीन सौ तिरपन दोहे हैं। साखी का अर्थ होता है 'गवाह'।

ज्ञान चौंतीसा–इसमें कुल मिलाकर 34 चौपाइयां हैं। पहली चौपाई में ॐ की व्याख्या की गई है।

विप्रमतीसी–इसमें ब्राह्मणों की बुद्धि का ही तीस चौपाइयों में वर्णन किया गया है। अंत में एक साखी भी दी गई है।

कहरा–इसमें 12 पद्य हैं। कहरा शब्द कहर से बना है, जिसका अर्थ दुःख भी है और जीवों को मोटी तथा झीनी माया से कहर ही मिलता है। इन्हीं से मुक्ति का मार्ग 'कहरा' बताता है।

बसंत–इसमें 12 पद्य हैं। बसंत छहों ऋतुओं में श्रेष्ठ माना जाता है। सद्‌गुरु कबीर ने इसी विषय में बताया है कि जीवों के लिए तो बारहों महीने ही बसंत हैं यानी जन्म-मृत्यु का चक्कर तो हर समय लगा रहता है।

चाचर–चाचर होली के मौके पर गाया जाने वाला एक तरह का गीत है।

बेलि : इसमें भी दो पद्य हैं। बेलि का मतलब लता होता है अर्थात मोहरूपी लता में दुख के फूल खिलते हैं, जिन्हें खाकर जीव जन्म-मरण के फेर में पड़ा रहता है।

विषय सूची

1. दोहे
2. साखी
3. शब्द
4. ज्ञान चौंतीसा
5. विप्रमतीसी
6. कहरा
7. बसंत
8. चाचर
9. बेलि
10. बिरहुली
11. हिण्डोला

दोहे

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

गुरु और गोविन्द दोनों खड़े हैं, समझ में नहीं आता पहले किसे नमस्कार किया जाए? पहले गुरु को ही नमस्कार करना उचित है क्योंकि गुरु ने ही तो ईश्वर का ज्ञान करवाया है।

गुरु गोविन्द दोउ एक हैं, दूजा सब आकार।
आपा मेटैं हरि भजैं, तब पावैं दीदार।।

गुरु और ईश्वर में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक ही हैं। बाहर से उन दोनों में भले ही अंतर है, पर अंदर से वे एक ही हैं। मन से 'मैं' की भावना निकालकर हरि को भजने से मन का सारा दोष मिट जाता है और तब हरि का दर्शन हो जाता है।

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।

गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता है और गुरु के बिना मोक्ष भी नहीं मिलता है। गुरु के बिना सत्य की पहचान नहीं होती है और गुरु के बिना मन का भ्रम भी दूर नहीं होता है।

गुरु समान दाता नहीं, याचक सीष समान।
तीन-लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्ही दान।।

गुरु के समान इस संसार में दाता नहीं है। शिष्य के समान कोई मांगने वाला भी नहीं है। गुरु तो ऐसा होता है कि तीनों लोकों का ज्ञान शिष्य को एक इशारे पर ही दे देता है।

गुरु सों ज्ञान जु लीजिए, सीस दीजिए दान।
बहुतक भोंदू बहि गये, राखि जीव अभिमान।।

गुरु से ज्ञान लेते समय अपना सिर उसके चरणों में झुका दीजिए। गुरु के सामने अकड़ दिखाने वाले बहुत से अज्ञानी बह गए और उनका कभी कल्याण नहीं हो सका।

गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।।

सभी ज्ञानी व्यक्ति गुरु और पारस पत्थर के अन्तर को समझते हैं। पारस पत्थर लोहा को सोना करता है और गुरु ज्ञान का बोध कराकर शिष्य को महान बना देता है।

गुरु शरणगति छाड़ि के, करै भरोसा और।
सुख सम्पत्ति को कह चली, नहीं नरक में ठौर।।

गुरु का साथ छोड़कर जो व्यक्ति दूसरों पर विश्वास करता है, उसको सुख-शांति तो मिलती नहीं, ऊपर से नरक के द्वार भी उसके लिए बन्द हो जाते हैं।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।